विलापगीत

1 जो नगरी लोगों में से भरी पड़ी थी,
वह अब कैसी सुनसान पड़ी हुई है! जो
किसी समय देशों के बीच महान थी, वह
विधवा महिला की तरह हो चुकी है। जो
राज्यों में राजकुमारी थी वह अब गुलाम हो
चुकी है। 2 वह रात के समय बिलख-बिलख
कर रोया करती है, और उसके गालों पर
आँसू देखे जा सकते हैं। उसके सभी प्यार
करने वालों में से, उसे कोई तसल्ली देने वाला
नहीं है। उसके सभी दोस्तों ने उसे धोखा
दिया है और वे उसके दुश्मन बन चुके हैं।
3 यहूदा को दुख और बहुत ज्यादा गुलामी
में रहना पड़ा। उसके रहने की जगह दूसरे
देश के लोगों के बीच है, लेकिन उसे किसी
तरह की शान्ति नहीं मिली है; उसके सब
खदेड़ने वालों ने उसकी बुरी हालत में जा
दबोचा है। 4 सिय्योन के रास्ते शोक से भरे हैं;
क्योंकि ठहराए त्यौहारों के लिए कोई आता
नहीं है, उसके सभी नगर-दरवाज़े उजाड़ पड़े
हैं! उसके पुरोहित कराह रहे हैं। उसकी
कुवारियाँ पीड़ा में हैं और दुख भोग रही हैं।
5 उसके विरोधी उसके मालिक बन चुके हैं।
उसके दुश्मन चैन से हैं; क्योंकि याहवे ने
उसके गुनाहों के बहुत हो जाने से उसे बहुत
दुख दिया है। दुश्मन उसके बाल-बच्चों को
गुलाम बनाकर हाँक ले गए हैं। 6 सिय्योन
की बेटी की सारी शान जाती रही है; उसके
सभी राजकुमार ऐसे हरिणी के समान हो
गए जिनको चरागाह नहीं मिलती और वे
अपने पीछा करनेवालों के सामने शांतिहीन
होकर भाग चुके हैं। 7 अपने दुख और अपने
निकाले जाने के समय में यरूशलेम उन
सब कीमती वस्तुओं को याद करती है, जो
पुराने समय में उसकी थी। जब उसकी प्रजा
विरोधी के हाथों में पड़ गई, तो किसी ने
उसकी मदद नहीं की। विरोधियों ने उसको
देखा और उसके अन्त पर हँसी उड़ाई।
8 यरूशलेम ने घोर अपराध किया, इसलिए
वह अशुद्ध हो गई है। उसको आदर देने वाले
उससे नफ़रत करते हैं, क्योंकि उन्होंने उसका
नंगापन देख लिया है। वह खुद आँहें भरते
हुए मुँह फेर लेती है। 9 उसके आंचल पर
अशुद्धता थी, उसने अपने अन्त पर मनन नहीं
किया, इसलिए उसका घोर पतन हो चुका है।
उसको शान्ति देने वाला कोई नहीं बचा। हे
याहवे, मेरी बुरी हालत देखें, क्योंकि दुश्मन
ताकतवर हो चला है। 10 विरोधियों ने उसकी
सभी कीमती वस्तुओं पर अपना हाथ बढ़ाया
है, क्योंकि जिन-जिन देशों के बारे में तुमने
आज्ञा दी थी, कि वे आपकी सभा में दाखिल
न हो सकें, उन्हीं को पवित्र स्थान में दाखिल
होते देखा गया है। 11 कराहते-कराहते उसके
सभी लोग खाने की तलाश में हैं। उन्होंने
अपनी कीमती चीज़ों को खाने के बदले दे
दिया है, ताकि उनकी जान बच सके। हे
याहवे, ध्यान दें, क्योंकि मैं घिनौनी हो चुकी
हूँ। 12 इस रास्ते से आने-जाने वाले, हे लोगो,
क्या यह तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं? ध्यान
दो और देखो। जो बड़ी तकलीफ मुझे झेलनी
पड़ रही है, जिसे याहवे ने अपने भयंकर
गुस्से के लिए मुझ पर डाला है, क्या मेरे
इस दुख की तरह और दुख है? 13 परमेश्वर
ने ऊपर से मेरी हड्डियों में आग भेजी है और
वे भस्म हो गई हैं। उन्होंने मेरे पैरों के लिए
जाल फैलाया है और मुझे खदेड़ दिया है।
उन्होंने मुझे इस तरह उजाड़ा है कि पूरे दिन

मैं बेहोश रही। 14 मेरे अनुचित कामों का बोझ
मुझ पर लादा गया है। उन्हें परमेश्वर ने अपने
हाथों से कसा है। उसे मेरी गर्दन पर चढ़ाया,
और मेरा बल कम कर दिया है, जिनका मैं
सामना भी नहीं कर सकती, उन्हीं के वश में
याहवे ने मुझे कर दिया है। 15 याहवे ने मेरे
सभी ताकतवर आदमियों को बेकार जाना,
उन्होंने ठहराए त्यौहार का ऐलान करके
लोगों को मेरे खिलाफ़ बुलाया कि मेरे जवानों
को कुचल डाले, यहूदा की कुमारी कन्या
को याहवे ने मानो कोल्हू में पेरा है 16 इन
बातों की वजह से मैं रो रही हूँ; मेरी आँखों
से आँसू बह रहे हैं, क्योंकि जिस शान्तिदाता
के कारण मेरा जी हराभरा हो जाता था, वह
मुझसे दूर चला गया, मेरी औलाद अनाथ
हो गई क्योंकि दुश्मन ज़ोरावर हो गया है।
17 सिय्योन हाथ फैलाए हुए है, उसे शान्ति देने
वाला कोई नहीं है। याहवे ने याकूब के बारे में
यह आदेश दिया है कि उसके चारों ओर के
रहवासी, उसके दुश्मन हो जाएँ; यरूशलेम
उनके बीच अशुद्ध महिला की तरह हो गई
है। 18 याहवे सच्चाई पर हैं, क्योंकि मैंने उनके
आदेश को नहीं माना; हे सब लोगों, सुनो और
मेरी पीड़ा पर नज़र डालो। मेरे कुमार और
कुमारियाँ गुलामी में जा चुकी है। 19 अपने
दोस्तों को मैंने पुकारा, लेकिन उन्होंने भी मुझे
धोखा दिया; जब मेरे पुरोहित और पुरनिए
इसलिए खाना ढूँढ़ रहे थे कि उनका मन तृप्त
हो जाए, तब नगर ही में उनकी जान निकल
गई। 20 हे याहवे, मुझ पर निगाह करें, क्योंकि
मैं मुसीबत में हूँ, मेरी अतड़ियाँ ऐंठ रही हैं।
मेरा मन पलट चुका है, क्योंकि मैंने बहुत
बलवा किया है। सड़क पर तलवार जान ले
रही है और घर में मौत का वातावरण है।
21 लोगों ने मेरा कराहना सुना है, लेकिन कोई
शान्ति देने वाला नहीं है। मेरे सभी शत्रुओं
को मेरी मुसीबत की खबर मिल चुकी है,
यह सुनकर कि आपने यह किया है, वे बहुत
खुश हुए। लेकिन जिस दिन के बारे में आपने
ऐलान किया था, उसे दिखाइए; तब वे मेरे
समान हो जाएँगे। 22 उनकी सारी बुराई की
ओर दृष्टि कीजिए, और जैसा आपने मेरी
बुराइयों के लिए मुझे सज़ा दी है, उनको भी
दीजिए, क्योंकि मेरा कराहना बढ़ चुका है
और मेरा मन बीमारी से कमज़ोर पड़ चुका
है।

2 याहवे ने सिय्योन की बेटी को किस
तरह अपने गुस्से के बादलों से ढांप
दिया है। उसने इस्राएल को खूबसूरती को
आकाश से पृथ्वी पर पटक दिया, और
कोप के दिन अपने पांवों की चौकी को
याद नहीं किया। 2 याहवे ने याकूब की सभी
बस्तियों को बहुत कठोरता से बर्बाद किया
है, उसने गुस्से में आकर यहूदा की बेटी
के मज़बूत गढ़ों को ढा कर मिट्टी में मिला
दिया है। उन्होंने गवर्नरों सहित राज्य को
अपवित्र ठहराया है। 3 उन्होंने गुस्से में आकर
इस्राएल के सींग को जड़ से काट डाला
है। उन्होंने दुश्मन के सामने उन लोगों की
मदद करने से इन्कार कर दिया। परमेश्वर
ने चारों ओर भस्म करती हुई लपट की
तरह याकूब को जला डाला। 4 प्रभु ने दुश्मन
बनकर धनुष लिया और बैरी बनकर दाहिना
हाथ बढ़ाए हुए खड़े हैं, जितने देखने में
लुभाते थे, उन सभी को उन्होंने मार डाला,
सिय्योन की बेटी के तम्बू पर परमेश्वर ने आग
की तरह अपनी जलजलाहट को भड़काया
है। 5 याहवे दुश्मन बन गए, उन्होंने इस्राएल
को निगल लिया। इस्राएल की सभी इमारतों
को उन्होंने मिटा डाला, और उसके मज़बूत
किलों को बर्बाद कर डाला है, और यहूदा
की बेटी का रोना-धोना बहुत बढ़ा दिया

है। 6 अपने मण्डप को बगीचे की मचान
की तरह अचानक गिरा दिया, अपने मिलाप
स्थान को परमेश्वर ने बर्बाद कर डाला है।
याहवे ने सिय्योन में ठहराए गए त्यौहार और
विश्रामदिन दोनों को भुला डाला है, और
अपने भड़के गुस्से से राजा और पुरोहित दोनों
को तुच्छ जाना है। 7 याहवे ने अपनी वेदी मन
से उतार डाली है और अपना पवित्रस्थान
बेइज्ज़ती के साथ छोड़ दिया है; भवनों की
दीवारों को उन्होंने दुश्मनों के अधिकार में
कर डाला है। याहवे के भवन में उन्होंने
ऐसा शोर-शराबा किया, मानो वह ठहराया
हुआ त्यौहार का दिन हो। 8 याहवे ने सिय्योन
की कुमारी की शहरपनाह तोड़ डालने का
इरादा कर लिया है। उन्होंने डोरी डाली और
अपना हाथ उसे नाश करने से न रोका। प्रभु
ने किले और शहरपनाह, दोनों ही को रोने
को विवश किया। वे दोनों एक साथ गिराए
गए। 9 फाटक ज़मीन से धस गए हैं, उनके
बेड़ों को बर्बाद किया जा चुका है। राजा
और गवर्नर गैरयहूदियों में रहने के कारण
नियमशास्त्र से वंचित हैं। भविष्यद्वक्ताओं को
प्रभु से दर्शन नहीं मिलता है। 10 सिय्योन
की बेटी के पुरनिए ज़मीन पर खामोश बैठे
हैं; उन्होंने अपने सिर पर मिट्टी उड़ाई और
टाट का फेंटा बान्धा हुआ है। यरूशलेम की
कुवारियों ने अपना सिर ज़मीन तक झुकाया
है 11 आँसू बहाते-बहाते मेरी आँखें रह गई है।
मेरी अतड़ियाँ ऐंठ रही है। मेरे लोगों की बेटी
की बर्बादी के कारण मेरा कलेजा फट चुका
है, दूध पीने वाले बच्चे भी नगर के चौराहों में
बेहोश हो रहे हैं। 12 रो-रोकर वे अपनी मां से
कह रहे हैं, अनाज और शहद कहाँ है, वे नगर
के चौराहों में जख्मी किए हुए इन्सान की
तरह बेहोश होकर अपनी जान अपनी-अपनी
मां की गोद में छोड़ते हैं। 13 हे यरूशलेम की
बेटी, मैं तुम से क्या कहूँ। तुम्हारी तुलना मैं
किस से करूँ? हे सिय्योन की कुमारी कन्या,
मैं कौन सी वस्तु तुम्हारी तरह ठहराकर तुम्हें
शान्ति दूँ, क्योंकि तुम्हारी पीड़ा समुद्र की
तरह बड़ी है, कौन तुम्हें स्वस्थ कर सकता
है? 14 तुम्हारे नबियों ने दर्शन का दावा करके
तुम से बेकार और बेवकूफी की बातें कही हैं;
उन्होंने तुम्हारे अनुचित और अनैतिक कामों
को नहीं दिखाया, नहीं तो तुम्हारी गुलामी
न होने पाती; लेकिन उन्होंने तुम्हें बेकार के
और झूठे वचन बताए, जो तुम्हारे लिए देश
से निकाल दिए जाने का कारण हुए 15 सब
इन्तज़ार करने वाले तुम पर ताली बजाते हैं;
वे यरूशलेम की बेटी पर यह कहकर ताली
बजाते और सिर हिलाते हैं, क्या यह वही
नगरी है; जिसे परमसुन्दरी और सारी दुनिया
की खुशी का कारण कहते थे! 16 तुम्हारे सभी
दुश्मनों ने तुम पर अपना मुँह पसारा है, वे
ताली बजाते और दांत पीसते हैं, वे कहते
हैं, हम जिस दिन का इन्तज़ार करते थे, वह
यही है, वह हमें मिल गया, हम उसे देख
चुके हैं। 17 याहवे ने जो इरादा किया था,
वह किया भी। जो वचन वह पुराने समय से
कहता आया है, वही उसने पूरा भी किया
है, उसने कठोरता से तुम्हें ढा दिया है, उसने
दुश्मनों को तुम पर खुश नहीं होने दिया।
और तुम्हारे द्रोहियों के सींग को ऊँचा किया
है। 18 वे प्रभु की ओर तन मन से पुकारते
हैं, हे सिय्योन की कुमारी (की शहरपनाह)।
दिन-रात अपने आँसू नदी की तरह बहाओ।
आराम बिल्कुल मत करना, न तुम्हारी आँख
की पुतली चैन ले। 19 रात के हर पहर की
शुरूआत में उठकर चिल्लाया करना। प्रभु के
सामने अपने मन की बातों को उण्डेल डालो,
तुम्हारे बाल -बच्चे जो हर एक सड़क के सिरे
पर भूख के कारण बेहोश हो रहे हैं, उनकी

जान के लिए अपने हाथ उनकी ओर फैलाना।
20 हे याहवे, ध्यान दें कि यह दुख आपने
किस को दिया है? क्या महिलाएँ, अपना
फल अर्थात अपनी गोद के बच्चों को खा
लें? हे प्रभु, क्या पुरोहित और नबी आपके
पवित्रस्थान में मारे जाएँ? 21 सड़कों में बच्चे
और बुज़ुर्ग दोनों ज़मीन पर पड़े हैं, मेरी
कुमारियाँ और जवान लोग तलवार से मारे
जा चुके हैं। आपने गुस्सा करने के दिन उन्हें
मार डाला, आपने कठोरता के साथ उनको
मार डाला है। 22 आपने मेरे डर के कारणों
को, ठहराए गए त्यौहार की भीड़ की तरह
चारों ओर से बुलाया है। और याहवे के क्रोध
के दिन न तो कोई भाग निकला और न कोई
बच पाया है; जिन्हें मैंने गोद में लिया और
पालन पोषण करके बढ़ाया, मेरे दुश्मन ने
उनको खत्म कर डाला।

3 परमेश्वर के गुस्से की छड़ी से पीड़ा पाने
वाला मैं ही हूँ; 2 वह मुझे ले जाकर
रोशनी में नहीं, अन्धेर ही में चलाते हैं;
3 उनका हाथ दिन भर मेरे ही खिलाफ़ उठता
रहता है। 4 परमेश्वर ने मेरी देह और खाल
गला डाली है और मेरी हड्डियों को तोड़ा है।
5 उन्होंने मुझे रोकने के लिए किला बनाया
और मुझको बड़े दुख और मेहनत से घेरा
है। 6 उन्होंने (परमेश्वर ने) मुझे बहुत दिन के
मरे हुए लोगों की तरह अन्धेरी जगहों में बसा
दिया है। 7 मेरे चारों ओर उन्होंने बाड़ा बान्धा
हैं, ताकि मैं निकल न पाऊँ, उन्होंने मुझे
भारी जंजीर से जकड़ा है; 8 मैं चिल्ला-चिल्लाकर
दोहाई दे रहा हूँ, फिर भी वह मेरी बिनती
को अनसुनी कर रहे हैं। 9 मेरे रास्तों को
परमेश्वर ने गढ़े हुए पत्थरों से रोका हुआ
है। उन्होंने मेरी डगरों को टेढ़ा कर दिया है।
10 वह मेरे लिए हमला करने वाले भालू और
शेर की तरह हैं। 11 उन्होंने मुझे मेरे रास्तों
से भुला दिया, और मुझे फाड़ डाला, मुझे
उन्होंने उजाड़ दिया है। 12 धनुष चढ़ाकर मुझे
परमेश्वर ने अपने तीर का निशाना बनाया
है। 13 अपने तीरों से मेरे मन का भेद डाला
है। 14 सभी मुझ पर हँस रहे हैं और मुझ पर
ढालकर गीत गाते हैं; 15 परमेश्वर ने मुझे भारी
दुख से भर दिया है और नागदौना पिलाकर
तृप्त कर दिया है। 16 मेरे दाँतों को कंकरी से
तोड़ डाला है और मुझे राख से ढाँक दिया
है। 17 मुझे मन से उतारकर कुशल से खाली
कर डाला है, कल्याण तो मेरे लिए दूर की
बात है। 18 इसलिए मैंने कहा, 'मेरी ताकत
कम हो गयी है और जो उम्मीद मुझे प्रभु
से थी, वह टूट चुकी है। 19 मेरा क्लेश और
मेरा मारा-फिरना, मेरा नागदौना और ज़हर
के पीना याद करें। 20 उन्हीं पर मैं यह याद
करता रहता हूँ, इसलिए मेरी जान बैठी जाती
है। 21 लेकिन मैं यह याद करता हूँ, इसलिए
मुझे आशा है। 22 हम अभी भी जीवित हैं,
यह प्रभु परमेश्वर की अपार दया का परिणाम
है, क्योंकि उनकी दया कभी समाप्त न होने
वाली है। 23 हर सुबह वह नई होती रहती है,
आपकी सच्चाई महान है। 24 मेरे मन ने कहा,
याहवे मेरा हिस्सा है, इस कारण उनसे मेरी
आशा है। 25 जो याहवे से अपेक्षा रखते हैं
और उनके पास जाते हैं, उनके लिए याहवे
भले हैं। 26 याहवे से मुझे पाने की आशा
रखकर खामोश रहना अच्छा है। 27 एक
पुरुष के लिए यह अच्छा है कि वह अपनी
जवानी में ज़िम्मेदारियाँ लेना सीखे। 28 वह
यह जानकर शान्त रहे कि प्रभु ने ही उसके
कन्धों पर ये ज़िम्मेदारियाँ डाली है। 29 वह
अपने मुँह को धूल में रखे, हो सकता है,
इससे कोई बात बन जाए, 30 वह अपना गाल
अपने मारने वाले की ओर फेरे और बदनामी
सहता रहे। 31 क्योंकि प्रभु सदा काल तक

मन में नाराज़गी नहीं रखते हैं, 32 चाहे वह
दुख भी दें। फिर भी अपनी बड़ी करूणा के
कारण वह दया भी करते हैं। 33 वह लोगों को
अपने मन से न तो दबाते हैं और न दुख देते
हैं। 34 दुनिया भर के गुलामों को पांव के नीचे
पीसना, 35 किसी आदमी का हक परमप्रधान
के सामने मारना, 36 और किसी इन्सान का
मुकदमा बिगाड़ना, उन तीनों कामों का प्रभु
देख नहीं सकते। 37 यदि परमेश्वर ने आदेश
न दिया हो, तब कौन है कि शब्द मुँह से
निकाले और वह पूरा हो जाए। 38 मुसीबत
और कल्याण क्या दोनों परमेश्वर की आज्ञा
से नहीं होते। 39 इसलिए जीवित मनुष्य क्यों
कुड़कुड़ाए? और अपने गुनाह की सजा पाने
पर नाराज़ क्यों हो? 40 हम अपने चरित्र को
ध्यान से देखें और परखें और प्रभु की ओर
मुड़े। 41 हम स्वर्ग के परमेश्वर की ओर अपना
मन लगाएँ और हाथ फैलाकर कहें : 42 हमने
गुनाह और बलवा किया है, और आपने माफ
नहीं किया है। 43 आपका गुस्सा हम पर है,
आप हमारे पीछे पड़े हैं, बिना तरस खाए
आपने घात किया है? 44 आपने अपने बादल
से घेर रखा है, ताकि आप तक प्रार्थना न
जा सके। 45 आपने हमें देश देश के लोगों के
बीच में कूड़ा-कर्कट सा ठहराया है। 46 हमारे
सभी दुश्मनों ने हम पर अपना मुँह पसारा है।
47 डर और गड्ढा, उजाड़ और बर्बादी हम
पर आ पड़े हैं, 48 मेरी आँखो से मेरी प्रजा की
बेटी की बर्बादी के कारण पानी की धारा
बह रही है। 49 मेरी आँख से हर समय आँसू
बहते रहेंगे, 50 जब तक याहवे, स्वर्ग से मेरे
ऊपर निगाह न डालें। 51 अपनी नगरी की
सभी महिलाओं की दशा देखने पर मेरा दुख
बढ़ता है। 52 जो बेकार में मेरे दुश्मन बन गए
हैं, उन्होंने बेरहमी से चिड़िया की तरह मुझे
पकड़ लिया है। 53 उन लोगों ने मुझे गड्ढे
में डालकर मेरी ज़िन्दगी को खत्म करने के
लिए मेरे ऊपर पत्थर लुढ़काए हैं। 54 मेरे सिर
पर से पानी बह गया है, मैंने कहा, 'अब तो मैं
बर्बाद हो गया।' 55 हे याहवे, "गहरे गड्ढे में
से मैंने आप से बिनती की; 56 आपने मेरी सुनी
कि जो दोहाई देकर मैं चिल्लाता हूँ, उस से
कान न मोड़ लें। 57 जब मैंने आपको पुकारा,
तब आपने मुझे भयभीत न होने को कहा।
58 हे प्रभु, "आपने मेरे मुकदमे को लड़ा और
मेरी जान को बचाया है।" 59 हे याहवे, मेरे
ऊपर होने वाली बेइन्साफी को आप देख
चुके हैं, आप ही मेरा इन्साफ कीजिए। 60 उन
लोगों ने मेरे साथ जो बदला लिया और मेरे
खिलाफ़ उनकी जो सोच है, उसे भी आप
जानते हैं। 61 हे प्रभु, उनकी सोच के साथ जो,
मेरी बेइज्ज़ती वे करते हैं, उन सभी को आप
जानते हैं। 62 मेरा विरोध करने वालों की बात
और उनकी योजनाओं की जानकारी आपको
है। 63 उनके उठने-बैठने पर गौर कीजिए, वे
गीतों को गाकर मेरा मज़ाक करते हैं। 64 हे
याहवे, आप इन लोगों को उनके बर्ताव के
हिसाब से बदला देने वाले हैं। 65 आप उनके
मन को सुन्न कर डालेंगे, आपकी ओर से
उन पर दण्ड आएगा। 66 आप अपने गुस्से
से उनको खदेड़-खदेड़कर दुनिया में उनका
नामों-निशान मिटा देंगे।

4 अच्छा सोना, खोटा कैसे हो गया। वह
बदल कैसे गया? पवित्रस्थान के पत्थर
हर एक सड़क के सिरे पर फेंक दिए गए
हैं 2 सिय्योन के उत्तम पुत्र जो कुन्दन की
तरह थे, वे कुम्हार के बनाए हुए मिट्टी के
घड़ों की तरह कैसे बेकार समझे गए हैं।
3 गीदड़िन भी अपने बच्चों को थन से लगाकर
दूध पिलाती है, लेकिन मेरे लोगों की बेटी
जंगल के शुतुमुर्गों के समान बेरहम हो गई
है। 4 दूध पीने वाले बच्चों की जीभ प्यास

के कारण तालू में चिपट गयी है। बच्चे खाना
मांगते हैं, लेकिन उनकी ओर ध्यान नहीं देता
है। 5 जो लोग मज़ेदार खाना खाया करते थे,
वे अब सड़कों पर परेशान घूम रहे हैं। जो
मखमल के कपड़ों में पले थे, वे अब घूरों
पर लोट रहे हैं। 6 मेरे लोगों का अपराध
सदोम के अपराध से भी अधिक भारी हो
गया है, जो किसी के हाथ डाले बगैर एक
पल में उलट गया था। 7 वहाँ के अमीर लोग
बर्फ से अधिक निर्मल और दूध से अधिक
सफेद थे; उनकी देह मूंगों से ज्यादा लाल
और उनकी खूबसूरती नीलमणि की तरह
थी। 8 लेकिन अब उनका चेहरा अन्धेरे से
अधिक काला है, वे सड़कों में पहचाने नहीं
जाते, उनकी खाल हड्डियों से चिपक गई है
और लकड़ी की तरह सूख गई है। 9 तलवार
से मारे गए लोग भूखों से बेहतर थे, जिनकी
जान खेत की पैदावार के समान बिना भूख
के मारे सूखती जाती है। 10 दयालु महिलाओं
ने अपने ही हाथों की बर्बादी के समय से
अपने बच्चों को पकाया, वे ही उनका खाना
बन गए। 11 प्रभु ने अपना पूरा गुस्सा दिखा
दिया है और वह भड़क गया है। सिय्योन
में ऐसी आग लगाई, जिससे उसकी नींव
तक भस्म हो गई है। 12 इस दुनिया का कोई
राजा या आम आदमी इस बात पर विश्वास
कर ही नहीं सकता था, विद्रोही और दुश्मन
यरूशलेम के फाटकों के अन्दर आ सकेंगे।
13 यह उसके भविष्द्वक्ताओं के अपराधों और
पुरोहितों के अनुचित कामों के कारण हुआ
है, क्योंकि वे उसके बीच सही जीवन जीने
वालों की हत्या करते आए हैं। 14 वे अब
सड़कों पर अन्धों की तरह फिर रहे हैं।
उनके कपड़े खून के छीटों से इतने अशुद्ध
हैं, कि उनके कपड़े कोई नहीं छू सकता।
15 लोग उन्हें ऊँची आवाज़ में कहते हैं, "अरे
अशुद्ध लोगों, हट जाओ, हमको मत छूओ।
जब वे भागकर मारे-मारे घिरने लगे, तब गैर
यहूदियों ने कहा, 'आने वाले समयों में वे
यहाँ नहीं टिक सकेंगे। 16 गुस्से के कारण प्रभु
ने उन्हें यहाँ-वहाँ बिखेर दिया। इसके बाद
न पुरोहितों को आदर मिला, न ही पुरनियों
पर कुछ अनुग्रह किया गया। 17 हमारी आँखें
मदद की उम्मीद में इन्तज़ार करते-करते थक
गई। हम एक ऐसे देश की ओर देखते रहे,
जो बचा नहीं सकते थे। 18 हमारे पीछे लोग
इस तरह पीछे पड़े कि हम नगर के चौराहों
पर भी न चल सके। हमारा अन्तिम समय
पास आया; हमारी उम्र पूरी हो गई, क्योंकि
हमारा अन्त आ गया था। 19 हमें खदेड़नेवाले
आकाश के उकाबों से अधिक गति से चलते
थे, वे पहाड़ों पर हमारे पीछे पड़ गए और
जंगल में हमें मारने की फिराक में बैठ गए।
20 याहवे का अभिषिक्त जो हमारी जान था,
और जिसके बारे में हमने सोचा था कि गैर
यहूदियों के बीच हम उसकी छाया में जिन्दा
रहेंगे, वह उनके खोदे गए गड्ढों में पकड़ा
गया। 21 हे एदोम की बेटी, तुम जो ऊज देश में
रहती हो, खुश रहो, लेकिन यह कटोरा तुम
तक भी पहुँचेगा और तुम मतवाली होकर
खुद को नंगा करोगी। 22 हे सिय्योन की बेटी,
तुम्हारे अनुचित कामों की राजा समाप्त, वह
फिर तुम्हें गुलामी में न ले जाएँगे। लेकिन
हे एदोम की बेटी, तुम्हें तुम्हारे अधर्म की
सज़ा मिलेगी और तुम्हारे अपराधों को प्रकट
किया जाएगा।

5 याहवे, याद करें, कि हम पर क्या गुज़री
है; हमारी ओर निगाह करके हमारी
बदनामी को देखें। 2 हमारा हिस्सा परदेशियों
का हो गया है, हमारे घर परायों के हो गए
हैं। 3 हम अनाथ और बगैर पिता के हो गए
हैं। हमारी माताएँ विधवा सी हो चुकी हैं।

4 हम पानी खरीदकर पीते हैं, लकड़ी के
लिए भी दाम चुकाना पड़ता है। 5 खदेड़ने
वाले हमारी गर्दन पर टूट पड़े हैं, हम थक
चुके हैं और कोई आराम नहीं मिलता। 6 हम
खुद मिस्र और असीरिया के वश में हो गए
ताकि पेट भर खाना मिले। 7 हमारे पूर्वजों
ने अपराध किया और मर भी गए, लेकिन
उनके अनुचित कामों का बोझ हम उठा
रहे हैं। 8 हमारे ऊपर गुलाम अधिकारी हैं,
उनके हाथ से हमें कोई छुड़ा नहीं रहा है।
9 जंगल की तलवार के कारण हम अपनी
जान को जोखिम में डालकर खाने की वस्तुएँ
ले आते हैं। 10 भूख की झुलसाने वाली आग
के कारण, हमारी खाल तंदूर की तरह काली
हो चुकी है। 11 सिय्योन में महिलाएँ और
यहूदा के नगरों में कुमारियाँ भ्रष्ट की जा
चुकी हैं। 12 हाथ के बल गर्वनरों को टाँगा
गया है, बुजुर्ग लोगों को कोई इज्ज़त नहीं दी
गई। 13 जवानों को चक्की चलानी पड़ती है,
और बच्चें, लकड़ी ढोते-ढोते लड़खड़ा जाते
हैं। 14 बुजुर्ग लोग अब फाटक पर नहीं बैठा
करते हैं। जवानों का गीत भी अब सुनाई
नहीं पड़ता है। 15 हमारे मन की खुशी जाती
रही, हमारा नाचना शोक में बदल चुका है।
16 हमारे सिर पर से ताज गिर चुका है। हम
पर हाय, क्योंकि हमने अपराध किया है।
17 इसीलिए हमारा मन कमज़ोर हो चुका है,
इन्हीं बातों से हमारे आंखें धुंधली हो चुकी
है। 18 क्योंकि सिय्योन पहाड़ उजाड़ पड़ा
है, उस में सियार घूम रहे हैं। 19 लेकिन हे
याहवे, आप तो हमेशा तक विराजमान रहेंगे।
आपका राज्य पीढ़ी-पीढ़ी तक बना रहेगा।
20 आपने हम को सदा के लिए क्यों भुला
दिया है? और क्यों बहुत समय के लिए छोड़
दिया है? 21 हे याहवे, हम को अपनी ओर
मोड़ लीजिए, तब हम फिर सुधर जाएँगे।
पुराने समय की तरह हमारे दिन बदलकर
ज्यों के त्यों कर दीजिए। 22 आपने हमें क्यों
सदा के लिए भुला दिया है, क्या आप हम से
बहुत गुस्सा हैं?

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com